One day training program on "Lac based Agroforestry/ Plantation Models" was organized on 18th November 2021 by Forest Research Centre for Eco-Rehabilitation, Prayagraj at Central Research Nursery, Padilla under the *Azadi ka Amrit Mahotsav*. The program was started by lighting the lamp by senior scientists along with Dr. Sanjay Singh, Head, FRC-ER. In his Welcome address Dr. Singh apprised about the efforts of FRC-ER in the revival of lac cultivation in 7 districts of Eastern Uttar Pradesh with the aim of increasing income of the marginal and tribal farmers.

Dr. Kumud Dubey, Senior Scientist, Extension In-Charge and Organizing Secretary informed about the program outline and also highlighted the intervention of lac host trees in the interest of farmers. Mr. Sanjay Chaudhary, Area Manager, Green Gold Farmer Company Limited, delivered a lecture on various aspects of Lac production, processing and marketing. He assured the famers to purchase lac by them.

Dr. Anubha Srivastava, Scientist while discussing the new lac host plant *Flamegia semialata*, said that by planting it in one hectare area, farmers can get about Rs. 2-2.5 lakhs *per annum* for seven years. In the field demonstration, the farmers were given field visits of various lac-based planation/agroforestry models established by Centre.

At the end of the program, participants and farmers interacted with the scientists and their queries were answered. About 80 farmers from Prayagraj district attended the training programme. The program was successfully completed and attended by the officials Dr. S.D. Shukla, STO, Ratan Gupta, TO and research personnel including Aman Kumar Mishra, Rahul Kumar, Ashish Kumar Yadav, Darshita Rawat, Prerna, Mohuya Pal, Charlie Mishra, Yogesh Kr. Agrawal, Kuldeep Chauhan, Shashi Prakash, Naresh Kalotra and Bijay Kumar Singh.

TRAINING ON "LAC BASED AGRO FORESTRY / PLANTATION / MODELS"
18-11-2021, Thursday - 10 :00 Am

TRAINING ON "LAC BASED AGRO FORESTRY / PLANTATION / MODELS"
18-11-2021, Thursday - 10 :00 Am

वैज्ञानिकों ने लाख आधारित कृषिवानिकी से दोगुना लाभ की दी जानकारी

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा केन्द्रीय अनुसंधान पौधशाला, पडिला पूर्वी उप्र में पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा लाख की खेती को पुनर्जीवित करने तथा किसानों प्रक्रिया पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए लाख की विभिन्न किस्मों यथा कुसुमी लाख के बारे में चर्चा की।

में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'लाख आधारित कृषिवानिकी/वृक्षारोपण मॉडल' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर केन्द्र प्रमुख डॉ संजय सिंह ने को इस क्रम में जोड़ने सम्बन्धी अनुबंध से अवगत कराया। उन्होंने लाख की खेती द्वारा किसानों की आमदनी को दोगुना करने सम्बन्धी राष्ट्रव्यापी प्रयास पर भी चर्चा की। उन्होंने वैज्ञानिक विधि से लाख उत्पादन वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ कुमुद दूबे तथा आयोजन सचिव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराते हुए लाख पोषक वृक्षों का किसानों के हित में चर्चा की। ग्रीन गोल्ड फार्मर कम्पनी लिमिटेड के क्षेत्र प्रबंधक संजय चैधरी ने लाख पोषक वृक्षों यथा बेर, कुसुम, पलाश आदि पर प्रकाश डालते हुए उनके उत्पादन तथा विपणन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ अनुभा श्रीवास्तव ने लाख पोषक वृक्ष फ्लेमेजिया सेमियालाता पर चर्चा करते हुए कहा कि एक हेक्टेअर क्षेत्र में इसके रोपण द्वारा किसान लगभग दो से ढाई लाख रूपए प्रति वर्ष प्राप्त कर सकते है। उन्होंने लाख उत्पाद के विपणन सम्बन्धी केंद्र द्वारा किए गए प्रयासों की भी जानकारी दी। कार्यक्रम के अन्त में प्रतिभागियों तथा किसानों से संवाद किया गया, जिसमें उन्हें लाख पोषित वृक्षों से सम्बन्धित शंकाओं का निवारण किया गया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु लगभग 80 किसान प्रतिभागी मौजूद रहे। कार्यक्रम केन्द्र के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ एस.डी शुक्ला तथा तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता के मार्गदर्शन में विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोध छात्रों द्वारा सम्पन्न हुआ।

लाख आधारित कृषिवानिकी से दोगुना लाभ - डॉ0 संजय सिंह

कृषक वैज्ञानिक विधि से लाख की खेती करें - डॉ0 अनुभा

विद्रोही सामना संवाददाता

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा केन्द्रीय अनुसंधान पौधशाला, पडिला में आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'लाख आधारित कृषिवानिकी/वृक्षारोपण मॉडल' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। कार्यक्रम के स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डा0 सिंह ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा लाख की खेती को पुनर्जीवित करने तथा किसानों को इस क्रम में जोड़ने सम्बन्धी अनुबंध से अवगत कराया, उन्होंने लाख की खेती द्वारा किसानों की आमदनी को दोगुना करने सम्बन्धी राष्ट्र व्यापी प्रयास पर भी चर्चा किया। डा0 कुमुद दूबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा आयोजन सचिव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराते हुए लाख पोषक वृक्षों का किसानों के हित में हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला। ग्रीन गोल्ड फार्मर कम्पनी लिमिटेड के क्षेत्र प्रबंधक संजय चौधरी ने लाख पोषक वृक्षों यथा बेर, कुसुम, पलाश आदि पर प्रकाश डालते हुए उनके उत्पादन तथा विपणन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

डा0 सिंह ने वैज्ञानिक विधि से लाख उत्पादन प्रक्रिया पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए लाख की विभिन्न किस्मों यथा कुसुमी लाख के बारे में भी विस्तृत चर्चा की। केन्द्र की वैज्ञानिक डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने लाख पोषक वृक्ष फ्लेमेजिया सेमियालाता पर चर्चा करते हुए कहा की एक हेक्टेअर क्षेत्र मे इसके रोपण द्वारा किसान लगभग दो से ढाई लाख रूपए प्रति वर्ष प्राप्त कर सकते हैं।

उन्होंने लाख उत्पाद के विपणन सम्बन्धी केंद्र द्वारा किए गए प्रयासों की भी जानकारी दी। क्षेत्र प्रदर्शन में किसानों को विभिन्न पोषक वृक्षों के मॉडलो एवं रोपण मॉडलो का क्षेत्र भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम के अन्त में प्रतिभागियों तथा किसानों से संवाद किया गया जिसमें उन्हें लाख पोषित वृक्षों से सम्बन्धित शुभकामनायें शांकाओं का निवारण किया गया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु लगभग 80 किसान प्रतिभागी मौजूद रहे।

लाख आधारित कृषि वानिकी से दोगुना लाभ

कृतिवानिका, वृक्षारोपण मॉडल विषयक कार्यक्रम आयोजित

प्रयागराज (नि.सं)। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा केन्द्रीय अनुसंधान पौधशाला, पडिला में आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ÷लाख आधारित कृषिवानिकी/वृक्षारोपण मॉडल÷ विषय पर दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यक्रम के स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डॉ. सिंह ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा लाख की खेती को पुनर्जीवित करने तथा किसानों को इस क्रम में जोड़ने सम्बन्धी अनुबंध से अवगत कराया। उन्होंने लाख की खेती द्वारा किसानों की आमदनी को दोगुना करने सम्बन्धी राष्ट्र व्यापी प्रयास पर भी चर्चा की। डॉ. कुमुद दूबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा आयोजन सचिव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराते हुए लाख पोषक वृक्षों का किसानों के हित में हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला। ग्रीन गोल्ड फार्मर कम्पनी लिमिटेड के क्षेत्र प्रबंधक संजय चौधरी ने लाख पोषक वृक्षों यथा बेर, कुसुम, पलाश आदि पर प्रकाश डालते हुए उनके उत्पादन तथा विपणन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डॉ. सिंह ने वैज्ञानिक विधि से लाख उत्पादन प्रक्रिया पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए लाख की विभिन्न किस्मों यथा कुसुमी लाख के बारे में भी विस्तृत चर्चा की। केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ. अनुभा श्रीवास्तव ने लाख पोषक वृक्ष फ्लेमेजिया सेमियालाता पर चर्चा करते हुए कहा कि एक हेक्टेअर क्षेत्र मे इसके रोपण द्वारा किसान लगभग दो से ढाई लाख रूपए प्रति वर्ष प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने लाख उत्पाद के विपणन सम्बन्धी केंद्र द्वारा किए गए प्रयासों की भी जानकारी दी। कार्यक्रम के अन्त में प्रतिभागियों तथा किसानों से संवाद किया गया जिसमें उन्हें लाख पोषित वृक्षों से सम्बन्धित शांकाओं का निवारण किया गया।

वैज्ञानिकों ने लाख आधारित कृषिवानिकी से दोगुना लाभ की दी जानकारी

प्रयागराज, १८ नवम्बर । पारि–पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा केन्द्रीय अनुसंधान पौधशाला, पडिला में आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत ''लाख आधारित कृषिवानिकी/वृक्षारोपण मॉडल'' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर केन्द्र प्रमुख डॉ संजय सिंह ने पूर्वी उप्र में पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा लाख की खेती को पुनर्जीवित करने तथा किसानों को इस क्रम में जोड़ने सम्बन्धी अनुबंध से अवगत कराया। उन्होंने लाख की खेती द्वारा किसानों की आमदनी को दोगुना करने सम्बन्धी राष्ट्रव्यापी प्रयास पर भी चर्चा की। उन्होंने वैज्ञानिक विधि से लाख उत्पादन प्रक्रिया पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए लाख की विभिन्न किस्मों यथा कुसुमी लाख के बारे में चर्चा की। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ कुमुद दूबे तथा आयोजन सचिव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराते हुए लाख पोषक वृक्षों का किसानों के हित में चर्चा की।

ग्रीन गोल्ड फार्मर कम्पनी लिमिटेड के क्षेत्र प्रबंधक संजय चौधरी ने लाख पोषक वृक्षों यथा बेर, कुसुम, पलाश आदि पर प्रकाश डालते हुए उनके उत्पादन तथा विपणन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। केन्द्र की वैज्ञानिक डॉ अनुभा श्रीवास्तव ने लाख पोषक वृक्ष फ्लेमेजिया सेमियालाता पर चर्चा करते हुए कहा कि एक हेक्टेअर क्षेत्र में इसके रोपण द्वारा किसान लगभग दो से ढाई लाख रूपए प्रति वर्ष प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने लाख उत्पाद के विपणन सम्बन्धी केंद्र द्वारा किए गए प्रयासों की भी जानकारी दी। कार्यक्रम के अन्त में प्रतिभागियों तथा किसानों से संवाद किया गया, जिसमें उन्हें लाख पोषित वृक्षों से सम्बन्धित शंकाओं का निवारण किया गया। कार्यक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु लगभग ८० किसान प्रतिभागी मौजूद रहे। कार्यक्रम केन्द्र के वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी डॉ एस.डी शुक्ला तथा तकनीकी अधिकारी रतन गुप्ता के मार्गदर्शन में विभिन्न परियोजनाओं में कार्यरत शोध छात्रों द्वारा सम्पन्न हुआ।

लाख आधारित कृषिवानिकी से दोगुना लाभ-डॉ0संजय सिंह

कृषक वैज्ञानिक विधि से लाख की खेती करें-डॉ0 अनुभा

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज द्वारा केन्द्रीय अनुसंधान पौधशाला, पडिला में आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत 'लाख आधारित कृषिवानिकी/वृक्षारोपण मॉडल' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ केन्द्र प्रमुख डा0 संजय सिंह के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्वलित करके किया गया। कार्यक्रम के स्वागत भाषण में केन्द्र प्रमुख डा0 सिंह ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र द्वारा लाख की खेती को पुनर्जीवित करने तथा किसानों को इस क्रम में जोड़ने सम्बन्धी अनुबंध से अवगत कराया, उन्होंने लाख की खेती द्वारा किसानों की आमदनी को दोगुना करने सम्बन्धी राष्ट्र व्यापी प्रयास पर भी चर्चा किया। डा0 कुमुद दूबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा आयोजन सचिव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराते हुए लाख पोषक वृक्षों का किसानों के हित में हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला। ग्रीन गोल्ड फार्मर कम्पनी लिमिटेड के क्षेत्र प्रबंधक संजय चौधरी ने लाख पोषक वृक्षों यथा बेर, कुसुम, पलाश आदि पर प्रकाश डालते हुए उनके उत्पादन तथा विपणन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। डा0 सिंह ने वैज्ञानिक विधि से लाख उत्पादन प्रक्रिया पर विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए लाख की विभिन्न किस्मों यथा कुसुमी लाख के बारे में भी विस्तृत चर्चा की। केन्द्र की वैज्ञानिक डा0 अनुभा श्रीवास्तव ने लाख पोषक वृक्ष फ्लेमेजिया सेमियालाता पर चर्चा करते हुए कहा की एक हेक्टेअर क्षेत्र मे इसके रोपण द्वारा किसान लगभग दो से ढाई लाख रूपए प्रति वर्ष प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने लाख उत्पाद के विपणन सम्बन्धी केंद्र द्वारा किए गए प्रयासों की भी जानकारी दी। क्षेत्र प्रदर्शन में किसानों को विभिन्न पोषक वृक्षों के मॉडलो एवं रोपण मॉडलो का क्षेत्र भ्रमण कराया गया। कार्यक्रम के अन्त में प्रतिभागियों तथा किसानों से संवाद किया गया जिसमें उन्हें लाख पोषित वृक्षों से सम्बन्धित शुभकामनायें शंकाओं का निवारण किया गया।

लाख की खेती से कमाएं दोगुना लाभ

केंद्रीय अनुसंधान पौधशाला की ओर से आजादी के अमृत महोत्सव के तहत हुआ प्रशिक्षण कार्यक्रम

prayagraj@inext.co.in

PRAYAGRAJ (18 Nov): पारि- पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र, प्रयागराज द्वारा केंद्रीय अनुसंधान पौधशाला, पडिला में आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत 'लाख आधारित कृषिवानिकी/वृक्षारोपण मॉडल' विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ केंद्र प्रमुख डा संजय सिंह के साथ वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया.

खेती को पुनर्जीवित करने पर जोर

केंद्र प्रमुख डा संजय सिंह ने पूर्वी उत्तर प्रदेश में पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र द्वारा लाख की खेती को पुनर्जीवित करने पर जोर दिया. डा कुमुद दूबे, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा आयोजन सचिव ने कार्यक्रम की रूपरेखा से अवगत कराते हुए लाख पोषक वृक्षों का किसानों के हित में हस्तक्षेप पर भी प्रकाश डाला. संजय चौधरी ने लाख पोषक वृक्षों यथा बेर, कुसुम, पलाश आदि पर प्रकाश डालते हुए उनके उत्पादन तथा विपणन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया. केंद्र की वैज्ञानिक डा अनुभा श्रीवास्तव ने लाख पोषक वृक्ष फ्लेमेजिया सेमियालाता पर चर्चा करते हुए कहा की एक हेक्टेअर क्षेत्र में इसके रोपण द्वारा किसान लगभग दो से ढाई लाख रूपए प्रति वर्ष प्राप्त कर सकते हैं. प्रशिक्षण में 80 किसान मौजूद रहे.